

चिदानन्द चैतन्यमय, शुद्धातम को जान ।  
 निज स्वरूप में लीन हो, पाओ केवलज्ञान ॥  
 नव केवल लब्धि प्रकटाओ,  
 फिर योगों को नष्ट कराओ ।  
 अविनाशी सिद्ध पद को पाओ,  
 आया-आया रे अवसर आनन्द का ॥३॥

(६)

धन्य-धन्य आज घड़ी कैसी सुखकार है ।  
 सिद्धों का दरबार है ये सिद्धों का दरबार है ॥टेक॥  
 खुशियाँ अपार आज हर दिल में छाई हैं ।  
 दर्शन के हेतु देखो जनता अकुलाई है ।  
 चारों ओर देख लो भीड़ बेशुमार है ॥१॥  
 भक्ति से नृत्य-गान कोई है कर रहे ।  
 आतम सुबोध कर पापों से डर रहे ॥  
 पल-पल पुण्य का भरे भण्डार है ॥२॥  
 जय-जय के नाद से गूँजा आकाश है ।  
 छूटेंगे पाप सब निश्चय यह आज है ॥  
 देख लो 'सौभाग्य' खुला आज मुक्ति द्वार है ॥३॥

(७)

वीर प्रभु के ये बोल, तेरा प्रभु! तुझ ही में डोले ।  
 तुझ ही में डोले, हाँ तुझ ही में डोले ।  
 मन की तू घुंडी को खोल, खोल-खोल-खोल ।  
 तेरा प्रभु तुझ ही में डोले ॥टेक॥  
 क्यों जाता गिरनार, क्यों जाता काशी,  
 घट ही में है तेरे, घट-घट का वासी ।  
 अन्तर का कोना टटोल, टोल-टोल-टोल ॥१॥

चारों कषायों को तूने है पाला,  
 आतम प्रभु को जो करती है काला ।  
 इनकी तो संगति को छोड़, छोड़-छोड़-छोड़ ॥२॥  
 पर मैं जो ढूँढा न भगवान पाया,  
 संसार को ही है तूने बढ़ाया ।  
 देखो निजातम की ओर, ओर-ओर-ओर ॥३॥  
 मस्तों की दुनिया में तू मस्त हो जा,  
 आतम के रंग में ऐसा तू रँग जा ।  
 आतम को आतम में घोल-घोल-घोल ॥४॥  
 भगवान बनने की ताकत है तुझमें,  
 तू मान बैठा पुजारी हूँ बस मैं ।  
 ऐसी तू मान्यता को छोड़, छोड़-छोड़-छोड़ ॥५॥

## शास्त्रभक्ति

(१)

हे जिनवाणी माता! तुमको लाखों प्रणाम, तुमको क्रोड़ों प्रणाम ।  
 शिवसुखदानी माता! तुमको लाखों प्रणाम, तुमको क्रोड़ों प्रणाम ॥टेक॥  
 तू वस्तु-स्वरूप बतावे, अरु सकल विरोध मिटावे ।  
 हे स्याद्वाद विख्याता! तुमको लाखों प्रणाम, तुमको क्रोड़ों प्रणाम ॥१॥  
 तू करे ज्ञान का मण्डन, मिथ्यात कुमारग खण्डन ।  
 हे तीन जगत की माता! तुमको लाखों प्रणाम, तुमको क्रोड़ों प्रणाम ॥२॥  
 तू लोकालोक प्रकाशे, चर-अचर पदार्थ विकाशे ।  
 हे विश्वतत्त्व की ज्ञाता तुमको लाखों प्रणाम, तुमको क्रोड़ों प्रणाम ॥३॥  
 शुद्धातम तत्त्व दिखावे, रत्नत्रय पथ प्रकटावे ।  
 निज आनन्द अमृतदाता! तुमको लाखों प्रणाम, तुमको क्रोड़ों प्रणाम ॥४॥  
 हे मात! कृपा अब कीजे, परभाव सकल हर लीजे ।  
 'शिवराम' सदा गुण गाता तुमको लाखों प्रणाम, तुमको क्रोड़ों प्रणाम ॥५॥